दक्षिण-पूर्व रेलवे में पुलों की मियाद

1943. **श्री लक्खीराम अग्रवाल:** क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या दक्षिण-पूर्व रेल मार्ग पर पड़ने वाली नदियों और नालों पर बने कुछ रेल-पुलों की मियाद पूरी हो गई है; और

(ख) यदि हां, तो ऐसे पुलों की संख्या कितनी है और उन पुलों को उनकी मियाद समाप्त हो जाने के पश्चात् भी उपयोग में लाये जाने के क्या कारण हैं?

रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सतपाल महाराज): (क) जी, नहीं।

(ख) प्रश्न नहीं उठता।

Extension of trains upto Dibrugarh

1944. SHRI YERRA NARAYANASWAMY: Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether Government have decided to introduce new train(s) and extend running of existing trains upto Tinsukia only and not upto Dibrugarh in 1996-97 after completion of gauge conversion work between Dimapur and Dibrugarh; if so, the reasons therefor;

(b) if reply to Part (a) above be in the affirmative, what is the justification for gauge conversion upto Dibrugarh; and

(c) whether Government propose to review its decision and introduce/extend new/existing trains upto Dibrugarh; if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI SATPAL MAHARAJ): (a) No, Sir.

(b) and (c) Do not arise.

रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग का प्रभाव

1945. **श्री शिव चरण सिंह:** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) सरकार द्वारा रसायनों और उर्वरकों हेतु राज-सहायता में की गई वृद्धि का ब्यौरा क्या है और इसका क्या औचित्य है;

(ख) क्या यह सच है कि रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग किए जाने के परिणामस्वरूप भूमि की उर्वरता उत्तरोत्तर कम होती जा रही है;

(ग) यदि हां, तो क्या इस संबंध में कोई आधिकारिक अध्ययन किया गया है; और

(घ) यदि हां, तो उनके निष्कर्षों का ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

कृषि मंत्री (श्री चतुरानन मिश्र): (क) दिनांक 6.7.1996 से फास्फेटिक तथा पोटेशिक उर्वरकों पर राजसहायता इस प्रकार से बढ़ाई गई है:

		(रूपए प्रति टन)
डी०ए०पी० (स्वदेशी)	1000	3000
डी०ए०पी० (आयातित)	—	1500
एम०ओ०पी०	1000	1500
सिंगल सुपर फास्फेट (एस०एस०पी०)	340	500
मिश्रित (काम्पलेक्स)	435-999	1304-2640

एन०पी०के० के अनुपात में सुधार लाने के उद्देश्य से इन उर्वरकों के अधिक प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए ऐसा किया गया है।

(ख) से (घ) एन०पी०के० उर्वरकों के प्रयोग में असन्तुलन निरन्तर रूप से मृदा की मात्रा में सूक्ष्म-पोषक तत्वों को दूर करता है, जो कि मृदा के उपजाऊपन पर प्रभाव डालता है। दीर्घावधि वाले उर्वरक परीक्षणों पर अखिल भारतीय समन्वय अनुसंधान परियोजना के तहत किए गए कई प्रयोगों ने स्पष्ट रूप से इन तथ्यों का संकेत किया कि रासायनिक उर्वरकों व आर्गेनिकों का सन्तुलित एवं समेकित प्रयोग निरन्तर रूप से वृद्धित फसल उत्पादकता के लिए आवश्यक है। तथापि, कोई भी सरकारी अध्ययन संचालित नहीं किया गया है।

ग्रामीण शिक्षा समितियां

1946. **श्री गोपाल सिंह जी० सोलंकी:** क्या मानव संसाधन विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) राज्यों में ग्रामीण शिक्षा समितियों की स्थापना किये जाने का मुख्य उद्देश्य क्या है;

(ख) प्रत्येक राज्य में ग्रामीण शिक्षा के प्रसार के लक्ष्य को कहां तक पूरा किया गया है;